Faculty Name – **Dr. Kavita Sharma (GF JU)**
Department – Ancient Indian History Culture & Archaeology
Class – **M.A. 2nd Semester** (एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर)
Subject – Historiography, Concepts And Methods
(इतिहास –लेखन, धारणाएं तथा पद्धतियां)

–: युनिट 5 :–

इतिहास के प्रमुख सिद्धान्त (Major Theories of History)

समाजशास्त्रीय सिद्धान्त – (Sociological Concept)

व्यक्ति और समाज एक दूसरे से इतने सम्बद्ध हैं कि एक के बिना दूसरा महत्वहीन हो जाता है। दोंनो के परस्पर घनिष्ठ सम्बद्ध होने के कारण समाज एवं सामाजिक संस्थाओं का ऐतिहासिक सूत्रों के रूप में विशेष अध्ययन सम्भव हो जाता है। **टायनबी** ने साफ शब्दों में लिखा है कि *"इतिहास का निर्माण सामाजिक अणु तत्वों से हुआ है। इतिहास के विभिन्न अंगों के निर्माण में व्यक्ति अथवा राष्ट्र का उतना योगदान नहीं होता जितना की समाजों का स्वीकार किया जाता है"।* इतिहास मनुष्य से सम्बन्धित है और मानव समाज से गहरायी से जुडा हुआ है अतः इतिहास और समाज में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होना स्वाभाविक है।

अतीत की घटनाओं का वर्णन करते हुए इतिहास समाज की प्रगति की ओर भी ध्यान केन्द्रित करता है हम कह सकते हैं कि इतिहास सामाजिक कार्यों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। **पालबर्थ** ने साफ लिखा है कि *"संस्कृति और संस्थाओं का इतिहास, समाजशास्त्र को समझने और उसकी सामग्री जुटाने में सहायक होता है"।* वास्तव में इतिहास के विकास का कारण भी विभिन्न युगों के समाज ही रहे हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार **रेनियर** ने उल्लेख किया है कि *"सामाजिक इतिहास आर्थिक इतिहास की पृष्ठभूमि तथा राजनीतिक इतिहास की कसौटी है"।* राजनीतिक परिवर्तनों का आधार भी सामाजिक परिवर्तनों को स्वीकार किया जाता है। अतः इतिहास गतिशील समाज से निकटता से जुड़ा हुआ है और दोनों को अलग कर पाना सम्भव नहीं है। **जी. एम. ट्रेवेलियन** ने भी स्पष्ट लिखा है कि *"सामाजिक इतिहास के अभाव में आर्थिक इतिहास मरूस्थल और राजनीतिक इतिहास महत्वहीन हो जाता है"।* इसी तरह **बी. शेख अली** के द्वारा संकेत दिया है कि *"समाजशास्त्र का विकास सामाजिक विकास के परिवेश में हुआ है"।* **मैक्स वेबर** अपने समय का प्रमुख समाजशास्त्री हैं और उनकी धारणा यह थी की *"मानव का अध्ययन एक सामाजिक प्राणी के रूप में किया जाना चाहिये"* । इसलिये *जर्मनी में इतिहास को समाजशास्त्र कहा जाता है।* इतिहास के अंतर्गत हम समाज के स्वरूप के साथ साथ क्रमिक विकास विचार धाराओं के मतान्तरों मानव स्वभाव और प्रगति का भी

Dr Kavita Sharma

अध्ययन करते हैं यही कारण है कि लार्ड एक्टन और टायनबी जैसे इतिहासकारों ने भी समाजिक दृष्टि से इतिहास के अध्ययन की उपयोगिता को स्वीकारा है।

वर्तमान युग के इतिहासकारों ने इतिहास के समाजशास्त्रीय सिद्धान्त को मान्यता प्रदान की है उनकी मान्यता है कि इतिहास के क्षेत्र में होने वाले समाजिक परिवर्तन का आधार भी मनुष्य की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता और चेतना है।

Dr Kavita Sharma